यूलिप पॉलिसी में धोखे से बचें...

मनोरंजन साहू
चीफ एजेंसी ऑफिसर, रिलायंस लाइफ इंश्योरेंस

सोच-समझकर खरीदें यूलिप

यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस पॉलिसी अब ज्यादा लचीली और पारदर्शी हो गई है। इस तरह की पॉलिसी में शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव का असर पड़ता है। इसी कारण बीमा नियामक आईआरडीए ऐसी पॉलिसी से जुड़े रिस्क ग्राहकों को समझाने पर जोर देता है।

लंबे समय की पॉलिसी है यूलिप

यूलिप इंश्योरेंस पॉलिसी 2-3 साल के लिए नहीं खरीदनी चाहिए। इसमें शेयर बाजार के उतार-चढ़ाव का जोखिम रहता है। जब बाजार में तेजी होती है तो यह पॉलिसी ज्यादा रिटर्न के नाम पर हाथों-हाथ बेची जाती है। 2008 में इसी की वजह से यूलिप की बहुत बिक्री हुई थी।

इंश्योरेंस एजेंट से करें कुछ सवाल

यदि कोई इंश्योरेंस एजेंट आपको यूलिप इंश्योरेंस पॉलिसी बेच रहा है तो उससे कुछ जरूरी सवाल जरूर करें, मसलन:

क्या निवेश की सीमा 10 साल से अधिक है?

यूलिप में निवेश का लॉक-इन पीरियड 3 साल से बढ़ाकर 5 साल कर दिया गया है। यदि कोई यूलिप पॉलिसी का पूरा लाभ लेना चाहता है तो उसे कम से कम 12-15 साल रखना चाहिए। साथ ही जोखिम उठाने के लिए भी तैयार रहना होगा। याद रखें, बाजार में तेजी आती है तो गिरावट भी आती है।

मिससेलिंग से बचें

कई लोगों को इंश्योरेंस के बारे में कम जानकारी होती है। इसका फायदा एजेंट उठाते हैं। इस समस्या से निजात दिलाने के लिए बीमा नियामक लगातार कंपनियों पर दबाव बना रहा है कि वे निवेशकों को जागरूक करें और प्रोडक्ट सरल बनाएं। इन सबके बावजूद कई एजेंट मिससेलिंग कर रहे हैं।

घरेलू शेयर बाजार में हाल के वर्षों में तेजी आई है। इसे देखते हुए इंश्योरेंस कंपनियों ने शेयर बाजार आधारित इंश्योरेंस पॉलिसी यूलिप बेचने पर जोर दिया। पिछले 2 वर्षों के दौरान कई इंश्योरेंस कंपनियों के प्रीमियम में अधिकतर हिस्सा यूलिप से आया है। वित्त वर्ष 2014 में नए प्रीमियम में 30 फीसदी से कम योगदान देने वाले यूलिप का आज प्राइवेट इंश्योरेंस कंपनियों के नए कारोबार के प्रीमियम में 60 फीसदी से अधिक का योगदान है।

क्या आपको इंश्योरेंस सुरक्षा कवर मिल रहा है?

आम तौर पर लोग सालाना आय का 5-6 गुना इंश्योरेंस कवर लेते हैं। लेकिन, कई बार यूलिप से बीमा की जरूरत पूरी नहीं हो पाती। इसलिए यूलिप से पहले टर्म इंश्योरेंस कवर खरीदें। यदि इंश्योरेंस सालाना प्रीमियम का 10 गुना नहीं है तो इनकम टैक्स में छूट नहीं मिलेगी। साथ ही मैच्योरिटी पर मिलने वाली रकम पर भी टैक्स चुकाना होगा।

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं

- कुल मिलाकर यूलिप इंश्योरेंस पॉलिसी के मामले में ग्राहक और इंश्योरेंस कंपनी, दोनों को सतर्क रहने की जरूरत है। जब शेयर बाजार बहुत ऊंचाई पर हो तो आपको हवाई किला बनाने की जरूरत नहीं है। जब बाजार गिरे तो घबराने की भी दरकार नहीं होती।
- इंश्योरेंस कंपनियों को भी यूलिप को लेकर चिंता है। यदि एक बार फिर आर्थिक मंदी आई और बाजार गिरे, तो इस पर से ग्राहकों का भरोसा पूरी तरह उठ जाएगा।
- सार यह है कि बीमा का मुख्य उद्देश्य सुरक्षा है। इसलिए सुरक्षा पर पूरा ध्यान दें। निवेश के लिए कई विकल्प हैं।

क्या पूरी अवधि तक प्रीमियम का भुगतान कर सकते हैं?

- यूलिप के लिए पूरी अवधि तक निवेश जारी रखें। मतलब, यदि पॉलिसी 15 साल की है तो 15 साल तक। यूलिप की और टर्म प्लान में लगने वाले मोर्टेलिटी चार्ज की तुलना करें। उम्र अधिक होने पर मोर्टेलिटी चार्ज कई गुना ज्यादा लगता है।
- यूलिप में आपको विकल्प मिलता है कि आप प्रीमियम की रकम कहां निवेश करें। यदि लगे कि आपको ज्यादा रिटर्न नहीं मिल रहा है तो आप फंड बदल सकते हैं। इस सुविधा का लाभ वेबसाइट पर जाकर उठाया जा सकता है।

फोन कॉल से भी होती है मिससेलिंग

आज की सबसे बड़ी समस्या धोखाधड़ी के कॉल के जरिए इंश्योरेंस बेचने की है। कुछ धोखेबाज लोग फोन पर इंश्योरेंस कंपनी का अधिकारी बनकर बात करके भोलेभाले लोगों को ठगते हैं। वे इंश्योरेंस पॉलिसी सरेंडर करवाकर या ज्यादा रिटर्न का लालच देकर इंश्योरेंस पॉलिसी बेचते हैं। कम जानकारी होने के कारण लोग अपनी कड़ी मेहनत का पैसा इनमें लगा देते हैं। जब तक हकीकत का पता चलता है तब तक सब कुछ हाथ से निकल चुका होता है। इसलिए यदि आप कोई भी इंश्योरेंस पॉलिसी खरीद रहे हैं, तो पूरी छान-बीन करके ही कोई फैसला करें। यह जरूरी है क्योंकि कुछ गलत फैसलों को सुधराना संभव नहीं होता है।